वस्तुनिष्ट–प्रश्न

3. सुमेर अभिलेख में 'नाविकों का देश' कौन था ?

(A) मेलुहा (B) मगान (C) दिलमून (D) इनमें कोई नहीं

2. तौलने की इकाई में सिंधुवासी किस अंका का प्रयोग करते थे ?

(A) चार (B) बाहर (C) आठ (D) सोलह

3. चान्दुदरों उत्पादन केन्द्र था –

(A) मुहर (B) मनका (C) वस्त्र (D) मूर्ति

4. अशोक का शासन काल था –

(A) 270–230 ई.पू. (B) 269–232 ई.पू. (C) 2260–240 ई.पू. (D) कोई नहीं

5. अशोक का अभिलेख सर्वप्रथम पढ़ा गया –

(A) 1845 ई० में (B) 1833 ई० में (C) 1837 ई० में (D) 1850 ई० में

6. मुद्राराक्षस का लेखक कौन था ?

(A) कौटिल्य (B) विष्णु ईमा (C) हिरषेण (D) विशाखदत

7. अंग जनपद की राजधानी कहाँ थी ?

(A) पाटलिग्राम (B) विराटनगर (C) चम्पा (D) वैशाली

8. द्विज के अन्तर्गत कौन–कौन हैं ?

(A) प्रथम दो वर्ण (B) प्रथम तीन वर्ण (C) प्रथम एवं चतुर्थ वर्ण (D) सभी वर्ण

9. पुरूष सूक्त का उल्लेख किस ग्रंथ में है ?

(A) अर्थवेवेद में (B) सामवेद में (C) यजुर्वेद में (D) ऋग्वेद में

10. समुद्र गुप्त किस वंश का शासक था ?

(A) मौर्य वंश (B) गुप्त वंश (C) हृर्चक वंश (D) इनमें कोई नहीं

11. शास्त्रों के अनुसार राज्य करने का अधिकार था ?

(A) क्षत्रियों को (B) ब्राहमणों को (C) वैश्य को (D) शुद्र को

12. कार्ले के चैत्य का किससे निर्माण करवाया ?

(A) ईंटों से (B) पहाड़ी चट्टानों से (C) पत्थर से (D) संगमरमर से

13. बौद्धों के लिए सवसे पवित्र स्थल है –

(A) स्तूप (B) बिहार (C) चैत्य (D) इनमें से कोई नहीं

14. राज्मनामा के नाम से किस ग्रन्थ का फारसी अनुवाद किया गया –

(अ) रामायण (ब) माहभारत (स) गीता (द) उपनिषद्

15. गुलवदन बेगम ने किसके आग्रह पर हुमायूँनाम लिखा–

(अ) अकबर (ब) हुमायूँ (स) बाबर (द) अबुल फजल

16. विजयनगर राज्य की स्थापना कब हुई –

(अ) 1326 (ब) 1336 (स)1339 (द) 1359

17. विजयनगर का महानतम शासक कौन था –

(अ) वीरनरसिंह (ब) कृष्णवेव राय (स) अच्युतरण (द) सदाशिवराय

18. अबुल फजल कृत 'आईन–ए–अकबरी' में किस शासक का वर्णन है ?

(अ) बाबर (ब) अकबर (स) हजाँगीर (द) शाहजहाँ

19. अकबरनामा एवं 'आइन–ए–अकबरी' के अनुवादक कौन थे ?

(अ) वेबरीन (ब) जैरंट (स) ब्लाकमैन (द) सभी

20. राजकुमार दारा का सम्बन्ध किस से था ?

(अ) चिश्ती (ब) सुहारवर्दी (स) कादिरी (द) इनमें से सभी से

21. सूफी मत की फिरदौसी शाखा निम्न में से कहाँ सबसे अधिक पनपी ?

(अ) बंगाल (ब) उड़ीसा (स) दिल्ली (द) बिहार

22. इब्नबतूता किस देश का यात्री था ?

(अ) मोरक्को (ब) मिस्र (स) तुर्की (द) ईरान

23. मध्ययुगीन यात्रियों का सरताज किस यात्री को कहा जाता है ?

(अ) अलबरूनी (ब) मार्कोपोला (स) वन्रियर (द) इब्नबतूता

24. हुमायूँ के दरबार में कौन अफ्रीकी यात्री भारत आया ?

(अ) अब्दूर्रज्जाक (ब) अलबरूनी (स) बर्नियर (द) इनमें से कोई नहीं

25. तुजक–ए–जहाँगीरी की रचना किसने की ?

(अ) अब्बास खाँ सरवानी (ब) गुलवदन बेगम (स) जहाँगी (द) नूरजहाँ

26. अकबर का बजीर था –

(अ) बैरम खाँ (ब) मुनीम खाँ (स) टोडरमल (द) अब्दुल रहीम

27. कार्नवालिस कोड बना ?

(a) 1797 (b)1793 (c) 1805 (d) 1775

28. जमीनदारी प्रथा भारत के किस राज्य में लागू हुआ।

(a) बंगाल (b) मद्रास (c) बम्बई (d) कोई नहीं

29. 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?

(a) इलहौजी (b) केनिंग (c) लिटन (d) रिपन

30. केनिंग से ठीक पहले भारत का गवर्नर जनरल कौन था ?

(a) केनिंग (b) इलहौजी (c) मिन्टो (d) कार्नवालिस

31. प्लासी की लड़ाई किसके–किसके बीच में हुई ?

(a) क्लाइव और सिराजउद्दौला (b) क्लाइव और सिराजुद्दौला

(c) इलाहौजी और सिराजउद्योला (d) इनमें से कोई नहीं

32. बंगाल का सर्वप्रथम गवर्नर कौन बना था ?

(a) कलाइव (b) केनिंग (c) रिपन (d) कार्नवालिस

33. सिराजउद्दौल के बाद बंगाल का नबाव कौन बना ?

(a) शुजाउद्दौला (b) मीर जाफर (c) क्लाइव (d) कार्नवालिस

34. 'गेटवे ऑफ इंडिया' का निर्माण कब हुआ था ?

(a) 1911 (b) 1916 (c) 1920 (d) 1930

35. गाँधी जी ने अहमदाबाद से डांडी की यात्रा किस लिए किया था ?

(a) असहयोग आन्दोलन (b) नमक कानून को तोड़ने के लिए

(c) इरविन से समझौता करने के लिए (d) इनमें से कोई नहीं।

36. ''गाँधी–इर्विन समझौता कब हुआ था ?

(a) 1930 (b) 1931 (c) 1940 (d) 1942

37. दूसरा गोलमेज सम्मेलन कब हुआ था ?

(a) 1930 (b) 1931 (c) 1932 (d) 1942

38. 'मारो फिरंगी' का नारा किसने दिया था ?

(a) भगत सिंह (b) मंगल पाण्डेय (c) बोस (d) गाँधी जी

39. भारत कब स्वतंत्र हुआ ?

(a) 1947 (b) 1948 (c) 1949 (d) 1950

40. स्वतंत्र भारत का अन्तिम गवर्नर जनरल कौन था ?

(a) लाई कर्जन (b) लाई माउन्टबैटन (c) सी० राजगोपालचारी (d) इनमें से कोई नहीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q. 1. प्राचीन भारत में राजा के दैवीकरण का सिद्धान्त क्या था ? परिचय दें।

Q. 2. हड़प्पा सभ्यता के समाजिक वर्गीकरण का उल्लेख करें।

Q. 3. पुरातात्विक श्रोत से क्या समझते हैं ? लिखें।

Q. 4. चाचर व बंजर भूमि की परिभाषा लिखिये।

Q. 5. सूफीवाद से क्या तात्पर्य है ?

Q. 6. बर्नियर द्वारा लिखित पुस्तक का नाम लिखिए। सती प्रथा के बारे में उसने क्या लिखा था ?

प्रश्न 7. रैयतवाड़ी भू–राजस्व बन्दोवस्ती व्यवस्था की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 8. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था ?

प्रश्न 9. गाँधी जी 1917 ई० में चम्पारण क्यों गए ? वहाँ उन्होंने क्या किया।

प्रश्न 10. भारतीय संविधान का निर्माण कब हुआ ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–

प्रश्न 11. भारत में मंदिर स्थापत्य पर निबंध लिखें।

प्रश्न 12. मौर्य प्रशासन के विशेषताओं का उल्लेख करें।

प्रश्न 13. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए।

प्रश्न 14. भारत में केन्द्र और राज्यों के मध्य विधायी सम्बन्धों की विवेचना करें।

प्रश्न 15. गोलमेज सम्मेलन कयों आयोजित किए गए ? इनके कार्यों की विवेचना कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर : –

(1) A **(2)** A **(3)** B **(4)** B **(5)** C

(6) D **(7)** C **(8)** B **(9)** D **(10)** B

(11) A **(12)** B **(13)** A

(14) ब **(15) अ** **(16) ब** **(17) ब** **(18) ब** **(19) द**

(20) स **(21) द** **(22) अ** **(23) ब** **(24) द** **(25) स**

(26) अ

(27) b **(28)** a **(29)** b **(30)** b **(31)** a **(32)** a

(33) b **(34)** a **(35)** b **(36)** b **(37)** b **(38)** b

(39) a **(40)** c

लधु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर :–

8. राजा को दैवीकरण की परिपाटी उत्तर भारत में ज्यादा प्रचलित थी। इसका प्रमुख कारण शासन में बिकेन्द्रीकरण की प्रवृति को रोकना एवं नियंत्रित करना था। इसके अन्तर्गत राजा का संबंध देवता से दिखलाया जाता था। इसके उद्देश्य पुजा का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त करना था। इस उद्देश्य से अशोक ने देवानांप्रिय की उपाधि धारण की। अशोक के वाद में शासकों ने भी इस परम्परा का अनुसरण दिया। सातवाहनों ने राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन जैसे देवताओं से तुलना की। चोल राजाओं और रानियों की मूर्तियां मंदिरों में स्थापित कर उनकी पूजा की जाने लगी। शकों, पह्लवों कुषाणों एवं गुप्तों ने भी दैवी सिद्धांत को अपनाया।

9. हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक वर्गीकरण विविध रूपों में मिलते हैं। वर्ग संरचना, समाजिक विभेद, आहार, वस्त्र–आभूषण, रहन–सहन मनोरंजन एवं साधन की विधियों की जानकारी हमें पुरातात्विक साक्ष्यों से होती है। हड़प्पाई परिवार संभवतः वड़े थे। पुरास्थलों से वड़ी संख्या में स्त्री मृण्मूर्तियों को देखकर यह अनुमान लगाया जाता है कि समाज में मातृसत्तात्मक तत्व प्रभावशाली थे। भवनों के आकार–प्रकार के आधार पर पुराविदों ने समाजिक संगठन की परिकल्पना की है। दुर्गों या गढ़ी में शासक वर्ग के लोग, बड़े आरामदायक मकानों में धनी वर्ग कम छोटे मकानों में मध्यम वर्ग वाले, तथा बैरकनूमा मकानों में श्रमिक वर्ग निम्न वर्ग, एवं किसान, शिल्पी रहते होंगे।

10. पुरातात्विक श्रोत अधिक प्रमाणिक होता है। गुहा लेख, स्तंमलेख, शिलालेख, सिक्के, मृद् मृण्मूर्तियों धातु पत्थर उपकरणों आदि रूप में देखा जा सकता है। सिंधु घाटी सभ्यता में बड़ी मात्रा में पुरातात्विक श्रोत प्राप्त हुए जिनसे सभ्यता के वारे में जानकारी मिलती है। सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरे विशिष्ट वस्तु है। अग्निकुंड स्नानागार, गोदीवाड़ा गहने धातुओं की मौजूदगी भी पुरातापि्वक श्रोंत ही है। प्राचीन भारत में सर्व प्रथम आहत सिक्के छठी शताब्दी इसा पूर्व से मिलने लगते हैं। इस प्रकार पुरातात्विक श्रोत साहित्यिक श्रोतों की पुष्टि में भी सहायक होता है।

Q.4. चाचर व बंजर भूमि की परिभाषा लिखिये।

Ans :- चाचर/छच्चर भूमि :– यह वह भूमि होती थी जो कृषि योग्य होने या उर्वरा शक्ति प्राप्त करने हेतु 3 या 4 वर्ष परती छोड़ दी जाती थी।

बंजर भूमि :– यह सबसे निम्न कोटि की भूमि थी जो 5 वर्ष के लिए खाली छोड़ दी जाती थी।

Q.5. सूफीवाद से क्या तात्पर्य है ?

Ans :- सूफीवाद प्रगाढ़ भक्ति एवं धर्म है। प्रेम उसका भाव है, कविता, संगीत तथा नृत्य उसकी आराधना के साधन हैं तथा परम्पराओं में विलीन हो जाना इसका आदर्श है। सूफी मद का प्रादुर्भाव दसवीं शताब्दी में माना जाता है।

Q.6. बर्नियर द्वारा लिखित पुस्तक का नाम लिखिए। सती प्रथा के बारे में उसने क्या लिखा था ?

Ans :- बर्नियर ने अपना यात्रा वृत्तान्त अपनी पुस्तक ''ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर'' में किया है। सती प्रथा के बारे में वह बताता है कि भारत में कुछ महिलाएँ प्रसन्नता से सती होती थीं एवं कुछ महिलाओं को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था। अपने वर्णन द्वारा वह युरोपीय श्रेष्ठता एवं भारत में व्याप्त बुराई को प्रमाणित करना चाहता था।

प्रश्न (7) रैयतवाड़ी भू–राजस्व बन्दोवस्ती व्यवस्था की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

उत्तर – भारत वर्ष में जैसे–जैसे अंग्रेजी राज्य का विस्तार की गई, यह व्यवस्था मद्रास, असम और बम्बई में भी लागू की गई। इस व्यवस्था में जमीन सीधे किसानों को दे दी गई। किसानों को अपनी भूमि बेचने या गिरवी रखने, खेती करने के लिए दूसरों को देने का अधिकार था। समय पर भूमि–कर देते रहने पर किसानों को भूमि के स्वामित्व से वंचित नहीं किया जा सकता था। किसान सरकार को कर देते थे। पैदावार की कुल कीमत का आधा भाग किसान सरकार को देते थे और आधा अपने पास रखते थे। इस व्यवस्था में किसानों की स्थिति अच्छी थी। रैयतवाड़ी व्यवस्था भारत की भूमि का 51.1 भाग पर लागू किया गया था।

प्रश्न (8) 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था ?

उत्तर – तात्कालिक कारण कारतूसों में लगी सूअर और गाय की चर्बी थी। 1857 ई० में सैनिकों को नई एनफील्ड राईफल दी गई और इन एनफील्ड राइफल में गोली भरने से पूर्व कारतूस को दॉत से छीलना पड़ता था। हिन्दू और मुसलमान दोनो ही गाय और सूअर की चर्बी को अपने–अपने धर्म के विरूद्ध समझते थे। अतः उनका भड़कना स्वाभाविक था। 26 फरवरी, 1857 ई० को बहरामपुर में 19वीं नेटिव इनफक्ट्री ने नए कारतूस प्रयोग करने से मना कर दिया। 29 मार्च 1857 ई० को चौतीसवीं नेटव इनफैक्ट्री के सिपाही मंगल पाण्डेय ने दो अंग्रेजों अधिकारियों को मार डाला। बाद में मंगल पाण्डेय को पकड़ कर फांसी दे दी गई। सिपाहियों का निर्णयाक विद्रोह 10 मई 1857 ई० को मेरठ से शुरू हो गया था।

प्रश्न (9) गाँधी जी 1917 ई० में चम्पारण क्यों गए ? वहाँ उन्होंने क्या किया।

उत्तर – बिहार के चम्पारण जिले में गोरे बागान मालिकों ने किसानों से एक अनुबंध किया था, जिसके अनुसार किसानों को अपनी जमीन के 3/20 वें हिस्से में नील

की खेती करना अनिवार्य था। किसान इस अनुबंध से मुक्त होना चाहते थे। क्योंकि नील की खेती करने से भूमि की उर्वरा–शक्ति समाप्त हो जाती थी। 1917 ई० में चम्पारण के राजकुमार शुक्ल के अनुरोध पर गाँधी जी चम्पारण पहुँचे और नील–बगान मालिकों के शोषण का विरोध किया। उनके प्रयासों से सरकार ने चम्पारण को किसानों की समस्याओं की जाँच हेतु एक आयोग नियुक्त किया। अंत में गाँधी जी की विजय हुई। गाँधी जी का पहला सफल आन्दोलन भारत में था।

प्रश्न (10) भारतीय संविधान का निर्माण कब हुआ ?

उत्तर – भारतीय संविधान का निर्माण एक संविधान सभा द्वारा किया गया। 9 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई और सच्चिदानंद सिन्हा इसके अस्थायी अध्यक्ष थे। 11 दिसम्बर 1946 ई० को डॉ० राजेन्द्र प्रसार को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया। इस संविधान सभा के द्वारा 2 वर्ष 11 माह 18 दिन के अथक प्रयास के द्वारा 26 नवम्बर 1949 ई० को हमारा संविधान बनकर तैयार हो गया था और हमारा संविधान 26 जनवरी 1950 ई० को लागू हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

11. मंदिरों की स्थापना धार्मिक विश्वासों का प्रतीक माना जाता है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने जहाँ अपने उपासना स्थल के रूप में चैत्यों एवं स्तूपों का निर्माण किया वहीं ब्राहमण धर्म वालों ने अपने देवी–देवताओं के निर्माण के लिए मंदिर बनवाए। मंदिर दो प्रकार के थे–गुहा मंदिर जो पहाड़ी चट्टानों को काटकर बनाए गए एवं संरचनात्मक मंदिर जिनका निर्माण ईंट–पत्थरों से एवं कहीं–कहीं लकड़ी से किया गया।

गुहा/गुफा मंदिर– गुप्तकाल के पूर्व गूफा मंदिर वनें। वाद में हिन्दू देवी–देवताओं के लिए ऐसे मंदिर बनाए गए। प्राचीनतम गुफा मंदिर के प्रमाण बिहार के गया के निकट बराबर एवं नागार्जुनी की पहाड़ियों में मिले हैं। यहाँ कुल मिलाकर सात गूफा मंदिर वने जो स्थानीय लोगों में सतघरवा के नाम से विख्याता है। उड़िसा में हाथीगूफा। एहॉल में विष्णु के वराह प्रतिमा वने। गूफा निर्माण के अंतिम चरण में एलोरा और महवलीपुरम के गूफा मंदिर वने।

संरचनात्मक मंदिर गुप्तकल में बनना आरंभ हुए। इस काल के मंदिरों में देवगढ़ (झासीं, उत्तर प्रदेश) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एरन (मध्य प्रदेश) तथा तिगवा मंदिर (मध्य प्रदेश) आदि भी वने। कुछ मंदिरों में मुख्य देवता के अतिरिक्त अन्य देवताओं के भी मंदिर वनाए गए। ऐसे मंदिर पंचायतन मंदिर कहलाए।

मंदिर निमोढ़ा की तीन प्रमुख शैलिय बिकसित हुईं– नगर शैली जो उत्तर भारत में द्रविड़ शैली जो दक्षिण भारत में एवं वेसर शैली जो दोनों शैली का संयुक्त रूप है, का निर्माण किया गया।

12. मौर्य शासकों ने साम्राज्य की स्थापना के साथ प्रशासन की भी समुचित व्यवस्था की। मौर्य प्रशासन का उदेश्य साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करना एवं शक्तिशाली बनाना था।

<u>केन्द्र प्रशासन</u> – राजा प्रशासन का प्रधान था। मंत्रियों, प्रशासनिक एवं सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति उसी के द्वारा की जाती थी। सचिव अथवा मंत्री राजा को

सलाह देते थे। अर्थशास्त्र में नौरशाही का विस्तृत विवरण है। कौटिल्य ने 18 तीर्थों एवं 27 अध्यक्षों का विवरण दिया है। तीर्थों में सेनापति, समाहर्त्ता, सन्निधाता, युवराज आदि थे। अध्यक्षों में सीताध्यक्ष, पोतवाहाध्यक्ष, आकटाध्यक्ष, काराध्यक्ष आदि थे। इसके अलावा स्थानिक स्तर के पदाधिकारियों का भी उल्लेख है। इसमें स्थानिक, गोप, नागरक प्रमुख हैं। गुप्तचर व्यवस्था के लिए मौर्यों के गूढ़ पुरूष एवं न्याय व्यवस्था के लिए न्यायधीश वहाल किए थे।

सैनिक व्यवस्था – प्लिनी के अनुसार चन्द्रगुपत मौर्य की सेना में 600000 पैदल, 30,000 घुड़सवार, 9000 हाथी तथा 8000 रथ थे। मेगास्थनिज भी सैन्य व्यवस्था का विवरण देता है।

<u>राजस्व व्यवस्था</u> – प्रशासन एवं सेना के खर्च के लिए मौर्यो ने सभी उपलब्ध साधनो का उपयोग किया अर्थशास्त्र में राजकीय आय के अनेक श्रोत थे। इनमें दुर्ग, राष्ट्रखनि, सेतु, वन वनिक पथ आदि। कृषि विस्तार की भी नीति अपनाई गई। सामान्यतः किसानों से 1/4 या 1/6 भूमिकर वसूला जाता था।

<u>नगर प्रशासन</u> – नगर प्रशासन का पहली वार विस्तृत विवरण मौर्यकाल में मिलता है। इंडिका और अर्थशास्त्र दोनों ग्रंथों में इसका विवरण है। नगर प्रवंध के लिए 30 सदस्यीय बोर्ड था। प्रत्येक समितियों में 5–5 सदस्य थे।

प्रश्न (13) कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए।

उत्तर – मुगलकालीन श्रोतो के अनुसार कृषि समाज में महिलाओं की निम्नलिखित भूमिका थी–

(i) मर्द और महिलाएँ खास किस्म की प्रक्रिया में भूमिकाएँ अदा करते हैं।

(ii) खेतों में महिलाएँ ओर मर्द कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते थे। मर्द खेत जोतते थे एवं हल चलाते थे और महिलाएँ बुआई, निराई और कटाई के साथ–साथ पकी हुई फसल का दाना निकालने का काम करती थी।

(iii) सूत कातने, वर्त्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने और गूँथने और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे दस्तकारी के काम उत्पादन के ऐसे पहलू थे, जो महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे।

(iv) किसी वस्तु का जितना वाणिज्यीकरण होता था, महिलाओं के श्रम की उसके उत्पादन के लिए उतनी ही माँग होती थी। जरूरत पड़ने पर किसान और दस्तकार महिलाएँ न सिर्फ खेतों में काम करती थीं बल्कि नियोक्ताओं के धरों पर भी जाती थीं और बाजारों में भी।

(v) महिलाएँ पुश्तैनी सम्पति के विक्रेता के रूप में ग्रामीण जमीन के बाजार में सक्रिय हिस्सेदरी रखती थीं।

प्रश्न (14) भारत में केन्द्र और राज्यों के मध्य विधायी सम्बन्धों की विवेचना करें।

उत्तर – केन्द्र और राज्यों के मध्य व्यवस्थापिका सम्बन्धों का तात्पर्य ऐसे सम्बन्धों से हे जो कानून बनाने की शक्ति से सम्बन्धित है। भारतीय संविधान में केन्द्र तथा राज्यों में व्यवस्थापिका की शक्तियों का बंटवारा विषयों की तीन सूचियाँ बनाकर किया गया है। ये सूचियाँ हैं :–

(1) संघ सूची

(2) राज्य सूची

(3) समवर्ती सूची

(1) संघ सूची – संघ सूची में राष्ट्रीय महत्व को 97 विषयों का उल्लेख किया गया है। इनमें प्रमुख विषय है – सुरक्षा, विदेश युद्ध, सन्धि, रेल, वायुयान, समुद्री जहाज, डाक, टेलफोन, प्रसारण, व्यापार, नोट मुद्रा, रिजर्व बैंक, जनगणना और आयकर इत्यादि। संघ सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केवल संसद का ही प्राप्त है।

(2) राज्य सूची – राज्य सूची में 66 विषय रखे गये हैं जिन पर कानून बनाने का अधिकार राज्य सरकारों को दिया गया। राज्य सूची का प्रमुख विषय है– कृषि, जेल, स्वास्थ्य चिकित्सा, सिंचाई का मालगुजारी इत्यादि।

(3) समवर्ती सूची – समवर्ती सूची में 47 विषय हैं। इस सूची के विषयों पर केन्द्र और राज्य दोनों कानून बना सकते हैं परन्तु किसी विषय पर यदि संसद और राज्य के विधान मंडल द्वारा बनाए गए कानूनों में विरोध होता है तो संसद द्वारा बनाए गए कानून की मान्य होंगे। इस सूची के प्रमुख विषय हैं – बिजली, विवाह, शिक्षा, कानून, मूल्य नियंत्रण, समाचार पत्र, छापेखाने, दीवानी कानून हिंसा, वन, जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन इत्यादि।

प्रश्न (15) गोलमेज सम्मेलन क्यों आयोजित किए गए ? इनका कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर – 12 नवम्बर 1930 ई० को प्रथम गोलमेज सम्मेलन लंदन में हुआ था। इस गोलमेज सम्मेलन का उदघाटन तात्कालिन ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम ने किया और प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में 89 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें ब्रिटेन के तीनों दलों का प्रतिनिधितव करने वाले 16 ब्रिटिश संसद सदस्य, ब्रिटिश भारत के 57 प्रतिनिधि जिन्हें वायसराय ने मानोनीत किया था तथा देशी रियासतों के 16 सदस्य सम्मिलित थे। कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया था।

गाँधी– इरविन समझौता– ब्रिटिश प्रधानी रेम्जे मेकडोनाल्ड तथा इरविन दोनों को ज्ञात हो गया कि कांग्रेस के बिना किसी संविधान का निर्माण नहीं किया जा सकता है। इस लिए बिना किसी शर्त के कांग्रेस के नेताओं को जेल से रिहाकर दिया गया। अंततः 5 मार्च 1931 को गाँधी और इरविन में समझौता हो गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस हो गया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार कर लिया।

दूसरा गोलमेज सम्मेलन– द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस की ओर से एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में महात्मा गाँधी ने भाग लिया। मुस्लिम लीग से अली जिन्ना ने भाग लिया। 7 सितम्बर 1931 ई० को दूसरा गोलमेज सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। गाँधी जी 12 सितम्बर को लन्दन पहुँचे। विभिन्न दल व वर्ग अपना–अपना हित देख रहे थे। इस बात से गाँधी जी दुखी थे और खाली हाथ वापस आ गए।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन– 17 नवम्बर 1932 ई० में तृतीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के किसी प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया। 24 दिस्म्बर 1932 को बिना किसी निर्णय के यह सम्मेलन समाप्त हो गया।